



**उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन**

**बैद्यनाथ द्विवेदी, शोधार्थी शिक्षाशास्त्र विभाग,  
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत**

**ORIGINAL ARTICLE**



**Corresponding Author :**

**बैद्यनाथ द्विवेदी, शोधार्थी शिक्षाशास्त्र विभाग,  
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत**

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 19/09/2020

Revised on : -----

Accepted on : 26/09/2020

Plagiarism : 09% on 21/09/2020



**Plagiarism Checker X Originality Report**

Similarity Found: 9%

Date: Monday, September 21, 2020

Statistics: 109 words Plagiarized / 1158 Total words

Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

mPp.ek;/fed Lrj ds dyk o foKku oxZ ds Nk= ,oa Nk=kvksa dh i;kZoj.k tloxdrk dk rgyukRed v;/u izLrkouk & izLrq 'kks/k i= dk fo"e; ^^mPp.ek;/fed Lrj ds dyk o foKku oxZ ds Nk= ,oa Nk=kvksa dh i;kZoj.k tloxdrk dk rgyukRed v;/u\*\* gSA i;kZoj.kh; laj(k.k

**शोध सार**

प्रस्तुत शोध पत्र का विषय "उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन" है।

पर्यावरणीय संरक्षण की आवश्यकता व इसका महत्व आज सभी देशों के लिए समान रूप से है। क्योंकि विश्व के सभी देश आज किसी न किसी प्रकार के पर्यावरणीय संकट से ग्रस्त है। चूँकि माध्यमिक स्तर पर छात्रों की चिन्तन, तर्क एवं निरीक्षण आदि क्षमताओं का विकास हो चुका होता है अतः इस स्तर के पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति के पर्यावरण से सम्बन्धित तथ्यों को लेकर छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित की जा सकती है। शोधार्थी द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन कर देखा गया है कि छात्र-छात्राओं पर पर्यावरण जागरूकता का क्या प्रभाव पड़ता है तथा वे अपने जीवन में पर्यावरण के प्रति कितने जागरूक हैं।

**मुख्य शब्द**

पर्यावरण, जागरूकता।

पर्यावरण का तात्पर्य उस परिवेश से होता है जो जीव मण्डल को चारों तरफ से घेरे घेरे हुए है। इसके अन्तर्गत वायुमण्डल, स्थलमण्डल तथा जलमण्डल के भौतिक, रासायनिक एवं सभी तत्वों को सम्मिलित किया जाता है। प्रकृति के दो तत्व वंशानुक्रम तथा पर्यावरण जीवों एवं उनकी क्रियाओं को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। इसलिए पर्यावरण को समझने के लिए वायुमण्डल, स्थलमण्डल, जलमण्डल एवं जीवमण्डल को समझना आवश्यक हो जाता है। किसी जीव या उसके अजैविक एवं जैविक परिवेश के बीच अन्तर्क्रिया केवल परिवेश या

सूक्ष्म पर्यावरण को ही नहीं वरन् जीवों के क्रियाकलापों को भी प्रस्तुत करती है।

**पर्यावरण में दो तत्व समाहित होते हैं** – जैविक और अजैविक। जैविक तत्वों में पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु और मानव आते हैं, जबकि अजैविक तत्वों में वायु, जल, भूमि, मिट्टी, वन आदि तत्व आते हैं। जैविक तथा अजैविक तत्व दोनों साथ-साथ क्रियाशील रहते हैं। ये आपस में निर्भर रहकर जीवन का संचार करते हैं। पर्यावरण के अन्तर्गत सभी प्राणी मानव के साथ एक ही भौगोलिक परिवेश में बराबर का हिस्सा बँटाते हैं, परन्तु इसमें मानव अपनी सर्वोपरि व महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

### डगलस, हॉलैण्ड के अनुसार

“पर्यावरण या वातावरण वह शब्द है जो समस्त बाह्य शक्तियों, प्रभावों और परिस्थितियों का सामूहिक रूप से वर्णन करता है। जो जीवधारी के जीवन, स्वभाव, व्यवहार और अभिवृद्धि, विकास तथा प्रौढ़ता पर प्रभाव डालता है।”

आधुनिक पर्यावरणविदों ने पर्यावरण को इस प्रकार के परिभाषित किया है— “पर्यावरण में वह सभी भौतिक, रासायनिक, जैविक एवं सांस्कृतिक कारक आते हैं जो किसी भी तरह से जन्तुओं के जीवन को प्रभावित करते हैं।”

### बोरिंग के अनुसार

“एक व्यक्ति के पर्यावरण में वह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है जो उसके जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक प्रभावित करता है।”

पर्यावरण जागरुकता का अर्थ व्यक्तियों और सामाजिक समूहों को सम्पूर्ण पर्यावरण व उससे सम्बन्धित समस्याओं के प्रति संवेदना और जागरुकता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना है। इसके अन्तर्गत रोगों से बचाव, भूख, कुपोषण एवं निर्धनता, वनों का विनाश, वन्य जीवन का सम्पूर्णतः नाश, भूमि अपरदन एवं कूड़े कचरे का संचय आदि सम्मिलित है।

### शोध का उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन करना।

### शोध की परिकल्पना

1. उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

### परिसीमन

1. शोध कार्य का क्षेत्र केवल ग्वालियर जिले तक सीमित किया गया है।
2. शोध कार्य ग्वालियर जिले के अन्तर्गत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक सीमित है।
3. शोध कार्य केवल उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र तथा छात्राओं तक ही सीमित है।

### न्यादर्श

शोध के सन्दर्भ में प्रतिनिधित्वपूर्ण प्रतिदर्श चयन के निमित्त बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि का अनुसरण किया जायेगा। प्रथम स्तर पर यादृच्छिक चयन विधि द्वारा ग्वालियर शहर से उच्च माध्यमिक स्तर के 20 विद्यालय चयनित किये गये। द्वितीय स्तर पर चयनित विद्यालयों में से कक्षा एकादश में अध्ययनरत् 600 छात्र-छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

### शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध के अध्ययन हेतु निम्न उपकरणों को प्रयोग किया गया है :

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध में प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरण जागरुकता अभिक्षमता मापनी [Environmental Awareness Ability Measure (EAAM)] का प्रयोग किया गया है। यह उपकरण 14 से 21 आयुवर्ग के छात्रों के लिये है।

## प्रयुक्त सांख्यिकी

शोध में सांख्यिकीय के लिए एस.पी.एस.एस. का प्रयोग कर निम्नलिखित सांख्यिकी विधि प्रयुक्त की गई है

1. मध्यमान
2. प्रामाणिक विचलन
3. टी-टेस्ट

## विश्लेषण

उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका : उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान

| समूह  | मध्यमान | प्रामाणिक विचलन | स्वतंत्रता अंश | प्रामाणिकता स्तर |      | टी मान |
|---|---------|-----------------|----------------|------------------|------|--------|
| कला वर्ग के छात्र-<br>एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता | 41.22   | 5.21            | 598            | 0.01             | 2.59 | 1.74   |
| विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता | 40.50   | 4.94            |                | 0.05             | 1.96 |        |

598 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 1.96 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.74 इन दोनों से काफी कम है अतः असार्थक है। परिकल्पना सत्य होती है। अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

## निष्कर्ष

आजकल पर्यावरण संतुलन बिगड़ गया है इसलिए विद्यालयों में विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूकता का पाठ पढ़ाया जा रहा है। प्रकृति का संतुलन बनाये रखने के लिए वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान भी चलाया जा रहा है इसलिए सभी वर्ग के विद्यार्थी इन कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं इसलिए कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी भी पर्यावरण के प्रति सचेत हो रहे हैं। इसलिए इन दोनों वर्गों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता के प्रति अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता है।

## सुझाव

1. बच्चों को पर्यावरण एवं प्रकृति से प्रेम करना सिखाना चाहिए।
2. विद्यालय को पर्यावरण प्रदूषण से मुक्त रखने की प्रेरणा दी जाये, विभिन्न स्रोतों से उत्सर्जित कचरे को अन्य उपयोगी पदार्थों में परिवर्तित करके प्रयोग में लाने की तकनीकें बताई जायें एवं सफाई को जीवन मूल्य के रूप में अंगीकार करने के लिये प्रोत्साहित किया जाये।
3. विद्यार्थियों को वैज्ञानिक तथ्यों की अधिक से अधिक जानकारी प्रयोगों और क्रियाओं से दी जाये। यह क्रियायें उन चीजों के माध्यम से दी जायें जो कि विद्यार्थियों के पर्यावरण का अंग हो।
4. पर्यावरण शिक्षा को विद्यालय पाठ्यक्रम में प्रत्येक स्तर पर अनिवार्य करना चाहिए।

5. पर्यावरण शिक्षा में ज्ञान से अधिक अभिवृत्ति, कौशल, तथा सहभागिता पर जोर देना चाहिए।
6. पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास अधिक दृढ़ता पूर्वक किया जाना चाहिए।
7. शिक्षकों को पर्यावरणीय सुधार एवं जागरूकता हेतु सामुदायिक जागरूकता के अभियान चलाने चाहिए।

### संदर्भ सूची

1. मिश्रा, महेन्द्र कुमार, (2007), "पर्यावरण का अध्ययन एवं शिक्षण विधियाँ" ज्ञान भारती प्रकाशन, जयपुर।
2. गोयल, एम.के. (2005), "पर्यावरण शिक्षा" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
3. शर्मा, आर.एस., "पर्यावरण शिक्षा, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. माथुर, एस. एस., (2005), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. माथुर, तेजबहादुर, (1991), "मूल्यों को सीखना-सिखाना" नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (क्षेत्रीय महाविद्यालय, अजमेर)।
6. बोहरा, वंदना, (2007), "रिसर्च मैथडोलॉजी" ओमेक्स पब्लिकेशन, अंसारी रोड, नई दिल्ली।

\*\*\*\*\*